उदयन वाजपेयी

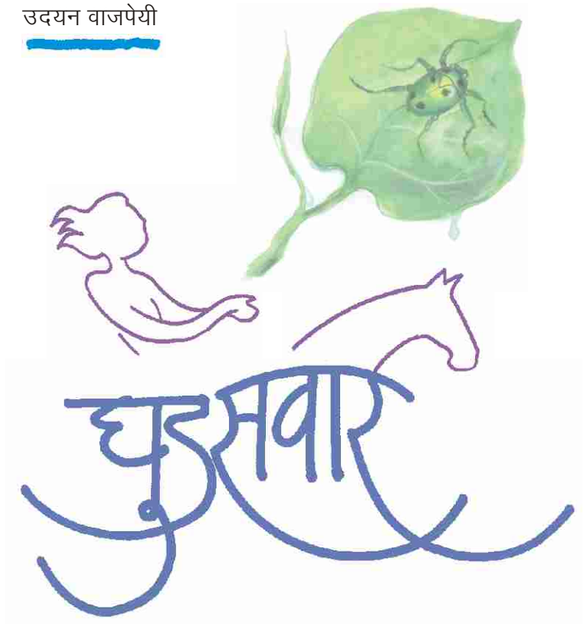

*खुशबू के लिए

संयोगनगर के राजकुमार के मन का कोई ठिकाना नहीं था। वह किसी एक जगह टिक नहीं पाता था। इसीलिए जब राजकुमार छत पर जाता, उसे लगता कि नीचे चलूँ। नीचे मैदान में खेलता तो उसे लगता कि छत पर चलूँ। राजा के पास रहता तो उसे लगता रानी के पास चलूँ। रानी के पास पहुँचता तो सोचता पेड़ पर चढ़कर कुछ देर बैठूँ। वह दौड़ लगा रहा होता तो उसे लगता कि धीरे-धीरे चलूँ। धीरे-धीरे चलता तो उसे लगता सरोवर में जाकर तैर आऊँ। वह पूरा दिन राजा के पास से रानी, रानी के पास से पेड़, पेड़ से सरोवर आते-जाते बिता देता। उसका मन किसी जगह भी टिक नहीं पाता। उससे सभी परेशान होते रहते। पर इससे भी मुश्किल बात यह थी कि वो खुद से परेशान था। दिन भर यहाँ से वहाँ, वहाँ से यहाँ भागते-भागते वह थक जाता। थककर चूर होकर जब वह सोता, उसे रात भर जंगलों, पहाड़ों और नदियों के सपने दिखते रहते। कभी वह देखता कि वह जंगल में खो गया है और हर जंगली जानवर उसकी ओर देखकर हँस रहा है। कभी वह देखता कि वह पहाड़ की चोटी से नीचे गिर रहा है। रास्ते में कई पक्षी उसके पास से पँख फड़फड़ाते गुज़र रहे हैं। कभी वह देखता कि वह नदी पार करते-करते रास्ते में ही भटक गया है। लहरें उसे चारों ओर से ऐसे बाँध रही हैं जैसे वे मोटी-मोटी रस्सियाँ हों। वह घबराकर जाग जाता और अँधेरी रात में ही रानी के कमरे की ओर चला जाता। थोड़ी देर वहाँ रहता कि उसे लगता। राजा के कमरे में जाना चाहिए। वह अँधेरे में चलता हुआ राजा के कमरे की ओर जाने लगता। वहाँ पहुँचकर वह थोड़ी-सी देर ही बैठ पाता, उसे लगता कि वापस अपने कमरे में चलना चाहिए। इस तरह एक कमरे से दूसरे, दूसरे से तीसरे में जाते-जाते वह बाकी बची रात बिता देता। सुबह होते ही पूरे का पूरा दिन उसके सामने पहाड़ की तरह आकर खड़ा हो जाता। राजा-रानी अपने इस बेटे के लिए बेहद चिन्तित रहते। उन्हें समझ में नहीं आता कि उसका क्या किया जाए!

एक दिन दूर देश से घोड़ों का एक व्यापारी आया। उसके पास कई घोड़े थे। रंग-बिरंगे कई घोड़े – काले घोड़े, कत्थई घोड़े, तरह-तरह के चितकबरे घोड़े। व्यापारी अपने हर घोड़े की विशेषता बता रहा थाः "महाराज, यह देखिए, यह रहा काली रेशम-सा काला घोड़ा। इसकी चमड़ी इतनी चिकनी है कि इस पर नज़रें तक फिसल जाती हैं। इसकी पीठ पर जो भी बैठेगा, उसे पता भी नहीं चलेगा कि यह सरपट भाग रहा है। यह घुड़सवार को अपनी पीठ पर इतनी सावधानी से बिठाए रखता है जैसे माँ बच्चे को गोद में उठाए हो।"

जब सभी लोग रेशम-से काले घोड़े को देख चुके, वह दूसरे घोड़े पर हाथ फेरता हुआ बोला, "महाराज, देखिए, यह रहा चितकबरा घोड़ा। कैसे मज़बूत पुट्ठे हैं इसके! यह एक ही छलाँग में बड़ी से बड़ी खाई पार कर जाए और ज़रा-सी लगाम खींचने पर ऐसे रुक जाए मानो कभी दौड़ ही नहीं रहा था"

जब सभी लोग आकर्षक चितकबरे घोड़े को देख चुके, वह एक और घोड़े के पास आकर बोला, "महाराज, देखिए यह रहा चमकीले मटके-सा कत्थई घोड़ा। कैसी लोच है इसके शरीर में। घने पेड़ों के, घनी झाड़ियों के बीच यह ऐसी फुर्ती से दौड़ता है मानो खुले मैदान में दौड़ रहा हो।"

व्यापारी एक के बाद दूसरे घोड़े के बारे में बताता जा रहा था। महल के अहाते में खड़े लोग ध्यान से उसे सुनते, फिर आश्चर्य से एक-एक घोड़े को देखने लगते। इन सब घोड़ों से कुछ दूरी पर एक सफेद घोड़ा खड़ा था। वह बाकी घोड़ों से लम्बा था और बिल्कुल शान्त भी। राजा की निगाह उसी घोड़े पर

गई। वह अपनी जगह पर चुपचाप खड़ा था। बीच-बीच में लम्बी-सी पूँछ उसकी पीठ पर बैठी मक्खियों को बुहार देती थी। उसकी आँखें नीचे झुकी थीं। बड़ी-सी पलकों पर सफेद बाल यूँ झिलमिला रहे थे मानो उन पर रुई के रेशे बिखरे हों। राजा ने घोड़ों के व्यापारी से पूछा, "इस घोड़े के बारे में आप कुछ क्यों नहीं बताते?"

वह बोला, "महाराज, क्या कहूँ। इसे बेचने का साहस मुझमें नहीं है।"

राजा को व्यापारी की यह बात बड़ी अजीब लगी।

पर साथ ही उसकी उत्सुकता भी बढ़ गई। वह बोला, "इसमें ऐसा क्या है कि आप इसे बेचना नहीं चाहते।"

व्यापारी बोला, "आप चाहे उसे खराबी कहें या खासियत पर मुझमें उसे बेचने का साहस नहीं है।"

राजा व्यापारी की यह बात सुनकर कुछ ज़्यादा ही उत्सुक हो उठा। वह ज़ोर देकर बोला, "आप बताएँ तो सही कि इस सफेद घोड़े में ऐसी क्या बात है कि आप इसे बेचना नहीं चाहते।"

घोड़ों का व्यापारी राजा के बिल्कुल क़रीब जाकर खड़ा हो गया और फिर कुछ सोचकर उसके लगभग कान में बोला, "महाराज, यह घोड़ा आवाज़ से भी ज़्यादा तेज़ दौड़ता है।"

"आवाज़ से भी ज़्यादा तेज़!"

राजा की बगल में उसी वक्त आकर खड़े हुए राजकुमार के मुँह से निकल गया, "आवाज़ से भी ज़्यादा तेज़!"

घोड़ों के व्यापारी ने मुस्कुराकर उसकी ओर देखा और उसकी बात दोहराते हुए कहा, "हाँ, आवाज़ से भी ज़्यादा तेज़!"

राजा ने मुड़कर राजकुमार की ओर देखा, फिर घोड़ों के व्यापारी की ओर मुड़कर बोले, "यह घोड़ा हम खरीदेंगे!"

राजकुमार ने आगे बढ़कर आवाज़ से भी तेज़ दौड़ने वाले सफेद घोड़े की लगाम थाम ली। वह उसे घुड़साल ले जाने की जगह धीरे-धीरे पैदल ही सरोवर की ओर ले चला। जब घोड़ा पानी पी चुका, राजकुमार कूदकर उसकी पीठ पर सवार हो गया। घोड़ा क्षणभर में हवा से बातें करने लगा। पलक झपकते ही वह नगर को पीछे छोड़ घने जंगल में जा पहुँचा। वे जैसे ही ऊँचे-ऊँचे पेड़ों के बीच पहुँचे, वह धीरे दौड़ने लगा। वहाँ चारों ओर से तरह-तरह की

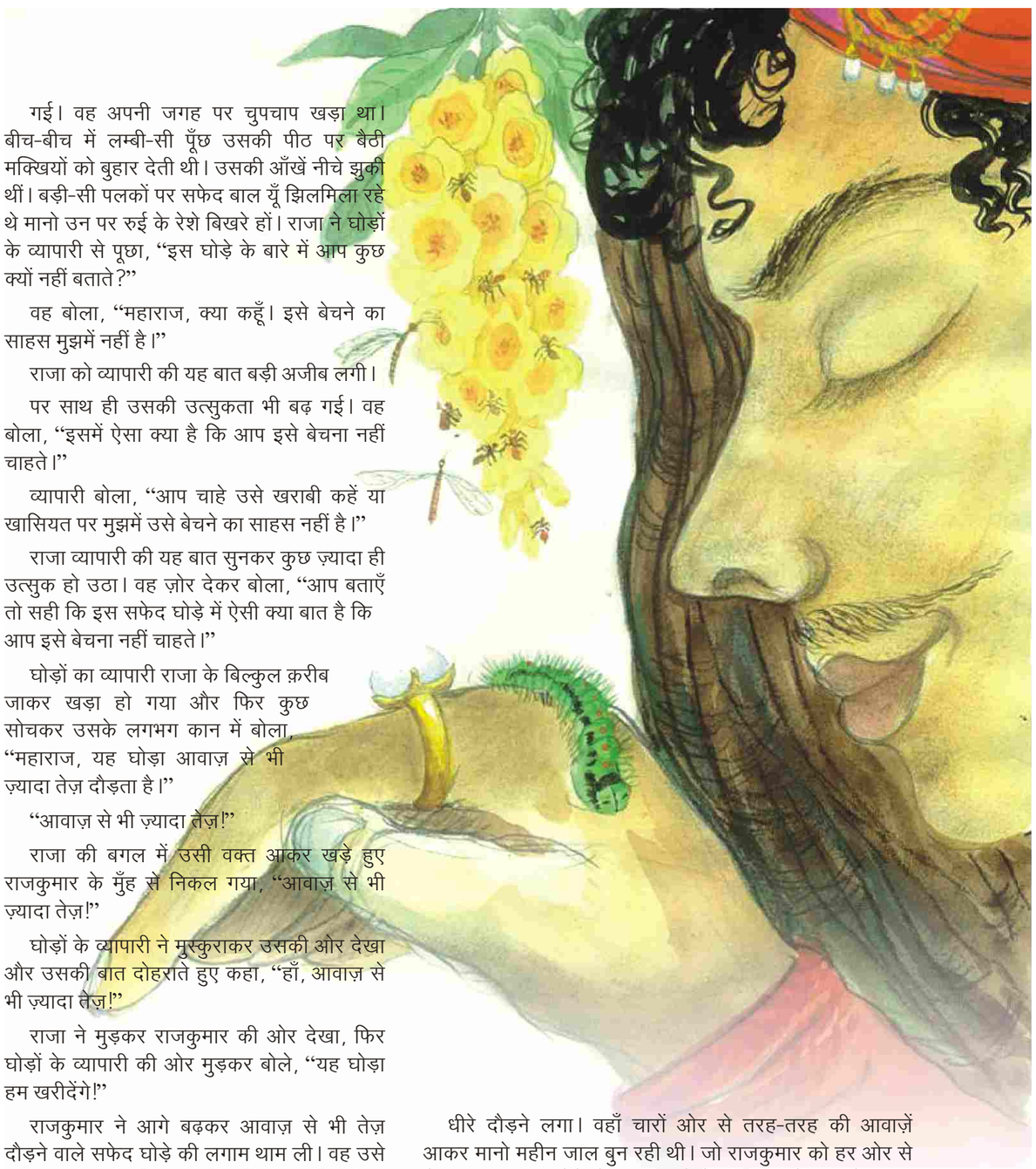

धीरे दौड़ने लगा। वहाँ चारों ओर से तरह-तरह की आवाज़ें आकर मानो महीन जाल बुन रही थी। जो राजकुमार को हर ओर से घेर रहा था। वह घोड़े से उतरकर पेड़ों की छाया में टहलने लगा। तरह-तरह की आवाज़ों को पहचानने की कोशिश करते-करते उसे नींद आने लगी। वह वहीं गिरे पत्तों पर लेटकर सो गया। इतनी गहरी नींद उसे जीवन में पहली बार आई थी।

उस दिन के बाद से राजकुमार हर रोज़ आवाज़ से भी तेज़ दौड़ने वाले सफेद घोड़े पर सवार होकर घने जंगलों और ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों

पर घूमने निकल जाता। नदियों के किनारे भटकता रहता। उसे लगता कि ये वे ही जंगल हैं जो उसे सपनों में दिखते थे। ये वे ही पहाड़ हैं जो उसे सपनों में दिखते थे। ये वे ही नदियाँ हैं। लेकिन अपने घोड़े पर सरपट भागते हुए उसे इन जंगलों, पहाड़ों और नदियों से ज़रा भी डर नहीं लगता था। बल्कि उसे यहाँ आकर ऐसा लगता मानो ये ही उसका घर हैं। वह तेज़ भागते घोड़े को कभी किन्हीं ऊँचे पेड़ों के नीचे रोक देता और वहाँ से टेढ़ी-मेढ़ी शाखों पर भागती-दौड़ती गिलहरियों को देखता रहता। सूखे पत्तों के नीचे साँपों की सरसराहट सुनता रहता। कभी वह घोड़े को नदी के पास छोड़ नदी के पानी में छप-छप करता रहता। कभी वह पहाड़ की चोटी पर जाकर वहाँ से दूर तक फैले जंगलों, मैदानों पर बिछलती धूप ताकता रहता। कभी घोड़े पर तेज़ भागते हुए ऊपर आसमान में यहाँ-वहाँ लुढ़कते तारों को गेंद की तरह पकड़ने की सोचता। कभी अँधेरी रात में अचानक घोड़े की पीठ से उतरकर दीमकों की बाम्बियों पर कान लगाकर उनके भीतर की महीन आवाज़ों को सुनता।

उसके दिन-दिन भर जंगलों-पहाड़ों में भटकते रहने से राजा-रानी परेशान होते पर उन्हें तसल्ली भी थी कि राजकुमार का मन कहीं तो लग रहा है। भले ही वह जंगलों-पहाड़ों में भटकता रहता हो पर शानदार घुड़सवारी करना भी सीख रहा है जैसा कि राजकुमारों को करना भी चाहिए। वह रोज़ सुबह अपने सफेद घोड़े पर सवार हो महल के बाहर निकल जाता और रात गए सितारों के बीच वापस लौटता।

उसने हज़ारों रंग-रूप के कीड़े-मकोड़ों, पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों, मछली-घड़ियालों को देखा और सुना। वह तरह-तरह की रंग-बिरंगी बीर-बहूटियों को हथेली में लेकर देर-देर तक उनके छोटे-छोटे पैरों की छुअन को महसूस करता रहता। लाल चींटियों की टेढ़ी-मेढ़ी कतारों को पेड़ों के तनों पर जाता हुआ देखता रहता। कई बार वह किसी घने पेड़ की नीचे झुकी डाल पर पत्तों के बीच जाकर सो जाता। उसका घोड़ा वहीं-कहीं खा-पीकर आँखें बन्द किए खड़ा रहता। किसी चिड़िया की चीं-चीं से उसकी नींद टूटती। वह घोड़े पर सवार हो आवाज़ से भी तेज़ भागने लगता।

घोड़ा सचमुच आवाज़ से भी तेज़ दौड़ता था। ऐसा भी हुआ कि राजकुमार जंगल में कुछ ज़्यादा ही देर के लिए रुक गया। तब राजा ने उसे ढूँढ़ने घुड़सवार सैनिक भेजे। जब वे उसे पुकार रहे होते, राजकुमार उनकी पुकार का ज़ोर-से चीखकर जवाब देता। लेकिन इससे पहले कि उसकी आवाज़ उसे ढूँढ़ने वालों तक पहुँच पाए, वह खुद पहुँच जाता। और उसकी आवाज़ मानो उसका पीछा करती हुई बाद में पहुँचती। एक बार वह जंगलों में कई दिनों तक भटकता रहा। रानी परेशान हो गई। दुखी होकर उसने राजकुमार को पूरी ताकत से पुकारा। राजकुमार ने जब उसकी पुकार सुनी तो अपना घोड़ा महल की ओर मोड़ दिया और पूरी ताकत से चिल्लाया, "माँ, मैं आ रहा हूँ!"

वह महल की ओर भागने लगा। इससे पहले कि उसका जवाब रानी तक पहुँच पाता, राजकुमार रानी के सामने पहुँच गया। रानी ने उसे गले लगाया तब जाकर उसका जवाब रानी के कानों तक पहुँचा, "माँ, मैं आ रहा हूँ!"

राजा उसके भटकाव को चुपचाप देखते रहते। वे उससे बोले, "सारा दिन जंगलों-पहाड़ों में भटकते-फिरते हो। शिकार क्यों नहीं करते? आखिर शिकार करना तो राजकुमारों की शान है!"

राजकुमार बोला, "वह कैसे किया जाता है?"

राजा ने जवाब दिया, "तीर से!"

राजकुमार को तीर चलाना खूब आता था। उसे वह बचपन में ही सीखा दिया गया था। वह निशाने का इतना पक्का था कि पाँच सौ मीटर दूर की चीज़ को बिना चूके भेद देता था। इस बार जब वह घोड़े पर सवार होकर जंगल गया उसके कँधे पर धनुष टँगा था और पीठ पर झूलते तरकश में कुछ तीर थे। इतने पैने कि वे हवा को भी टुकड़े-टुकड़े कर दें। जंगल पहुँचकर वह रोज़ की तरह पेड़-पौधों, कीट-पंतगों, पशु-पक्षियों को देखने, सुनने में लग गया। नदी के बहने की एकतान सरसराहट सुनने में देर तक खोया रहा। वह भूल ही गया कि आज वह शिकार करने की सोचकर आया था। रात हो गई। आसमान में ढेरों तारे उभर आए। राजकुमार घोड़े को धीरे-धीरे चलाता हुआ वापस महल की ओर लौटने लगा। उसे आसमान गहरे नीले रंग का उलटा कटोरा जान पड़ रहा था जिसमें यहाँ-वहाँ जड़े तारे टिमटिमा रहे थे। कभी कोई तारा टूटकर गिर पड़ता।

"काश, मैं इस नीले कटोरे को सीधा कर पाता तब एक भी तारा टूटकर नीचे न गिरता।" उसने सोचा।

महल पहुँचकर उसने घुड़साल में घोड़े को बाँधा और अपने कमरे की ओर चल दिया। सुबह जब वह घुड़साल जा रहा था, रास्ते में राजा मिल गए। उन्होंने मुस्कराकर राजकुमार को देखा और बोले, "किया कोई शिकार?"

राजकुमार चुप रहा आया। वह धीरे-से फुसफुसाया, "मैं भूल गया!"

राजा बोला, "क्या भूल गए?"

राजकुमार फिर फुसफुसाया, "शिकार करना और धनुष-तरकश! शायद नदी किनारे भूल आया!"

राजकुमार नदी किनारे पहुँचा। नदी के बहते पानी के ऊपर हल्का नीला कोहरा ठहरा हुआ था। तभी आसमान से एक चील तेज़ी से नीचे उतरी। वह कोहरे को चीरती हुई नदी की सतह पर साँस लेने आई मछली को चोंच में दबाकर वापस आसमान को लौट गई।

"शिकार!" राजकुमार के मन में कौंधा। उसे याद आया कि वह अपना धनुष-तरकश कल रात यहीं-कहीं छोड़ गया था। उसे उन्हें खोजना है। वह घोड़े से उतरा। नदी किनारे की रेत पर कुछ देर चला। दूर एक शिला पर उसे धनुष और तरकश दिखाई दिए। उन्हें किसी जंगली जानवर ने छुआ तक नहीं था। राजकुमार ने उन्हें उठाया। वह घोड़े पर सवार हुआ और उसे तेज़ दौड़ाते हुए शिकार ढूँढ़ने लगा। कुछ दूरी पर उसे हिरणों का झुण्ड दिखाई दिया। यह रहा शिकार! उसने सोचा और बिना कुछ विचार किये एक हिरण पर निशाना लगाकर घोड़े पर बैठे-बैठे ही तीर चला दिया। तीर के छूटते ही उसके दिमाग में न जाने कहाँ से ढेरों प्रश्न आकर बिजली की-सी तेज़ी से चक्कर काटने लगे।

यह मैंने क्या किया? इस बेचारे हिरण को मैं क्यों मार रहा हूँ? यह इतना भोला हिरण कितनी सुन्दरता से कुलाँचे भर रहा था। उसे पता भी नहीं है कि मैंने उसे मारने के लिए तीर छोड़ दिया है... मैं आखिर इसे क्यों मार रहा हूँ? क्या सिर्फ इसलिए कि मैं राजकुमार हूँ और राजकुमारों को शिकार करना चाहिए? वह बेचैन हो उठा। तभी उतनी ही तेज़ी से उसके दिमाग में एक विचार आया। उसने तुरन्त घोड़े को उस ओर दौड़ाया जिधर उसने तीर छोड़ा था। घोड़ा आवाज़ से भी तेज़ दौड़ने लगा। इतनी तेज़ भागते घोड़े पर बैठकर उसने देखा कि रास्ते की सभी चीज़ें, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, कीट पतंगे पीछे छूटते जा रहे हैं। मानो कोई उन्हें तेज़ी से पीछे की ओर खींचकर लपेटता जा रहा हो। छूटे हुए तीर के हिरण तक पहुँचने के पहले ही घोड़ा वहाँ पहुँच गया। राजकुमार कूदकर हिरण के सामने खड़ा हो गया। जब उसका तीर वहाँ पहुँचा, वहाँ हिरण नहीं, राजकुमार का सीना था। उसने राजकुमार का सीना छेद दिया। जब राजकुमार दर्द से कराहा, उस हिरण ने उस की ओर आँखें फेरीं। राजकुमार के सीने से खून की धार बह निकली थी। वह धीरे-धीरे ज़मीन पर गिर रहा था। घोड़ा पास खड़ा हाँफ रहा था। शिकार होने से बचा हिरण बाकी हिरणों के साथ कुलाँचे भरता घने जंगल में पेड़ों के बीच ओझल हो रहा था।

* खुशबु मेरी शागिर्द रश्मि लाल की बेटी है। यह कहानी मैंने सबसे पहले खुशबु को ही सुनाई थी, इसलिए इसके लिखे जाने में उसकी याद बराबर बनी रही।

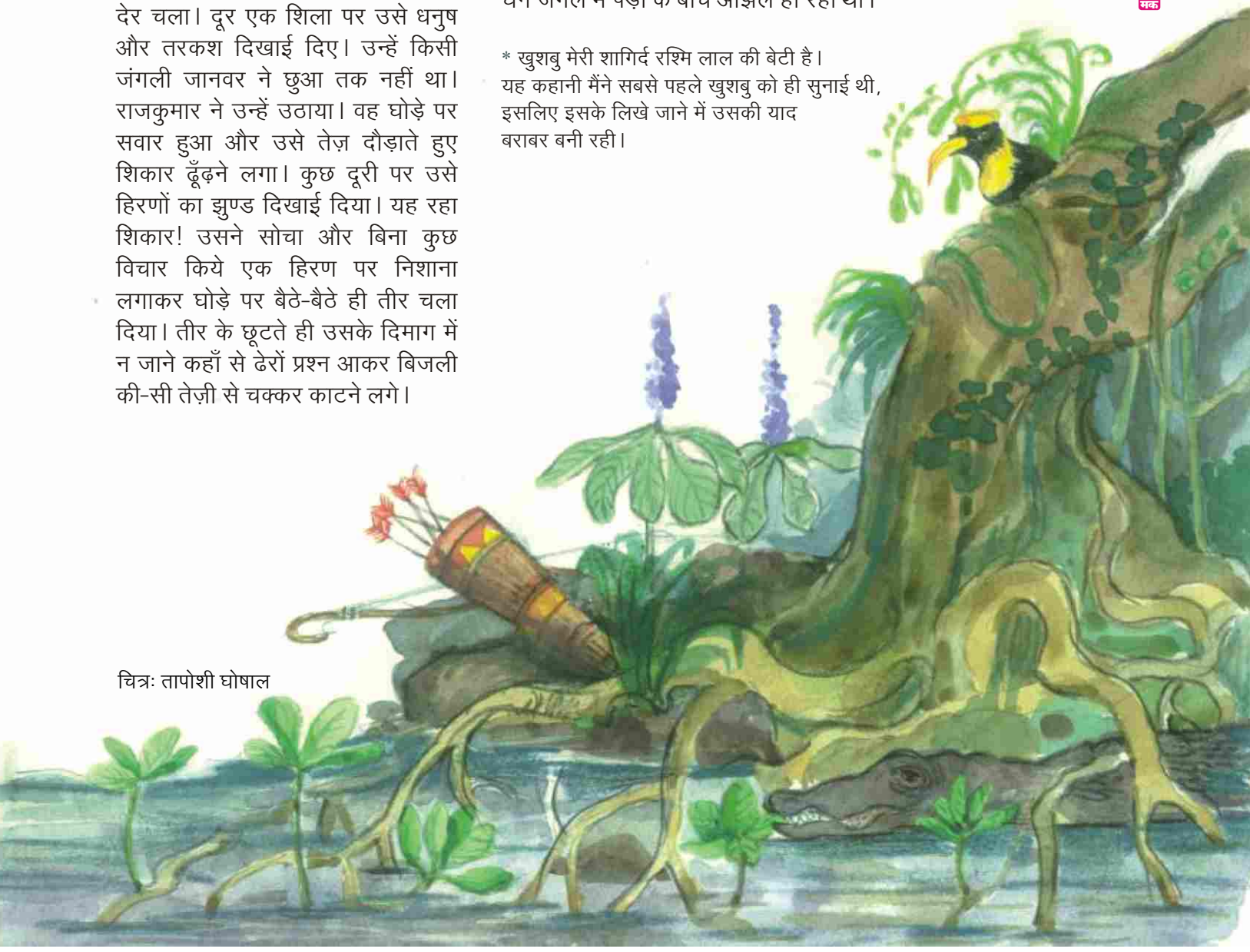

चित्रः तापोशी घोषाल